विभाजन एक विभीषिका

आलेख : डॉ. प्रकाश झा

दृश्य	:	एक आयोजन चल रहा है...
गीत	:	आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिंदुस्तान की... इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की... वंदे मातरम... वंदे मातरम... आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिंदुस्तान की... इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की... वंदे मातरम... वंदे मातरम...
बच्चा	:	दादा जी... दादा जी आपने सुना ये लोग कितना अच्छा गा रहे हैं ।
दादाजी	:	वंदे मातरम... वंदे मातरम... शब्द ही ऐसा है,

		जिसे बार बार गाने का, सुनने का मन करता है ।
बच्चा	:	दादा जी... ये लोग आज ये गीत क्यों गा रहे हैं ?
दादाजी	:	ये लोग 14 और 15 अगस्त के आयोजन के लिए तैयारी कर रहे हैं ।
बच्चा	:	दादा जी 15 अगस्त तो मैं जानता हूँ कि स्वतंत्रता दिवस है पर 14 अगस्त के लिए क्यों दादा जी ?
दादाजी	:	14 अगस्त को हमारा देश विभाजित हुआ था, तो हम लोग उसे 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाते हैं ।
बच्चा	:	हाँ दादा जी, ये 'विभाजन की विभीषिका' क्या है दादा जी ?

दादाजी	:	विभाजन का मतलब नहीं समझते ? जब विभाजन का ही मतलब नहीं समझते तो विभीषिका का मतलब कैसे समझोगे ? अरे बच्चों... यह देश हमारा पहले बहुत बड़ा था । पर, बाद में इसका विभाजन हो गया ।
बच्चा	:	मतलब बाँट दिया गया ?
दादाजी	:	हाँ बाँट दिया गया लेकिन बाँटना... विभाजन अलग अलग होता है । मान लो तुम्हारे पास दस टॉफी है । उसे तुम्हें आपस में बाँटना है तो कैसे बाँटोगे ? पाँच – पाँच बाँट लोगे... अब सोचो कि तुम्हारे पास एक ही टॉफी है... तो क्या करोगे...
बच्चा	:	मैं उसे तोड़कर दो हिस्सों में बाँट दुँगी ।
दादा जी	:	बच्चे... तोड़ना... उसे खण्डित खण्डित कर देना कर... यही विभाजन होता है । और इससे जो

		पीड़ा उपजती है... जो तकलीफ होती है वही विभीषिका है।
बच्चा	:	दादा जी... यह विभाजन तो समझ में आ गया... लेकिन यह विभीषिका... विभाजन ... विभीषिका...
दादा जी	:	चलो बताता हूँ...
गीत	:	आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिंदुस्तान की... इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की... वंदे मातरम... वंदे मातरम... आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिंदुस्तान की... इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की... वंदे मातरम... वंदे मातरम...

बच्चा	:	दादा जी... हमें अच्छी तरह से बताइये न... कि यह विभाजन कैसे हुआ था।
दादा जी	:	बताता हूँ... बताता हूँ... विभाजन के बारे में... अपने देश के विभाजन के बारे में बताता हूँ... ध्यान से सुनो... विभाजन के बारे में इतिहासकारों का जो दृष्टिकोण है, उसे गौर से सुनो... ध्यान देकर सुनो और उसे समझने की कोशिश करो... । हमारे देश को धर्म के नाम पर दो हिस्सों में बाँट दिया गया। लाखों लोग इस पार से उस पार भागने लगे। चारों तरफ भगदड़ मच गयी। लाखों लोग बेघर हो गए...
गाना	:	है प्रीत जहाँ की रीत सदा है प्रीत जहाँ की रीत सदा मैं गीत वहाँ के गाता हूँ भारत का रहने वाला हूँ भारत की बात सुनाता हूँ

		है प्रीत जहाँ की रीत सदा
सूत्रधार एक	:	अखण्ड भारत का विभाजन अभूतपूर्व मानव विस्थापन और मजबूरी में पलायन की एक दर्दनाक काला इतिहास है ।
सूत्रधार दो	:	यह एक ऐसी घटना है, जिसमें लाखों लोग अजनबियों के बीच एकदम विपरित परिस्थिति में नया आशियाना तलाश रहे थे ।
सूत्रधार एक	:	विश्वास और धार्मिक आधार पर एक हिंसक विभाजन की कहानी के अतिरिक्त इस बात की भी कहानी है कि...
सूत्रधार दो	:	कैसे एक जीवन शैली तथा वर्षों पुराने सह – अस्तित्व का युग एकदम नाटकीय तरीके से समाप्त हो गया ।
सूत्रधार एक	:	लगभग 60 लाख हिन्दू, सिख और अन्य सम्प्रदाय के लोग जिन क्षेत्र से निकल आए, जो

		बाद में पश्चिमी पाकिस्तान बन गया ।
सूत्रधार दो	:	65 लाख मुसलमान पंजाब, दिल्ली और भारत के अनेक हिस्सों से पश्चिमी पाकिस्तान चले गए थे ।
सूत्रधार एक	:	20 लाख हिन्दू और अन्य सम्प्रदाय के लोग पूर्वी बंगाल, जो बाद में पूर्वी पाकिस्तान बना, उसको छोड़कर पश्चिम बंगाल आए ।
सूत्रधार दो	:	1950 में 20 लाख और हिन्दू और अन्य सम्प्रदाय के लोग पश्चिम बंगाल आए ।
सूत्रधार एक	:	दस लाख मुसलमान पश्चिम बंगाल को छोड़ कर पूर्वी पाकिस्तान चले गए ।
सूत्रधार दो	:	इस विभीषिका में मारे जाने वाले लोगों का आँकड़ा लगभग 5 लाख बताया जाता है ।
सूत्रधार	:	लेकिन अनुमानतः यह आँकड़ा पाँच से 10

एक		लाख के बीच का है ।
सूत्रधार दो	:	कहा जाता है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संभवत: सबसे बड़े पैमाने पर इस विभाजन के फलस्वरूप धर्म के नाम पर हत्याएँ हुईं ।
सूत्रधार एक	:	सदियों पुराने सामाजिक ताने – बाने और विश्वास का संबंध टूटा ।
गीत	:	आँखों से बहते, ये दर्द की धारें आँखों से बहते, ये दर्द की धारें छूटी हुई ज़िंदगी, खोई हुई यारें । छूटी हुई ज़िंदगी, खोई हुई यारें । आँखों से बहते, ये दर्द की धारें आँखों से बहते, ये दर्द की धारें छूटी हुई ज़िंदगी, खोई हुई यारें । छूटी हुई ज़िंदगी, खोई हुई यारें ।
बच्चा	:	दादा जी... इन लोगों का घर बार सब छीन

		लिया गया है । मुझे तो सुनकर ही डर लग रहा है ।
दादा जी	:	यह डरने की बात तो है ही बच्चे... सोचो जो लोग उस वक्त रहे होंगे उन पर क्या गुजरी होगी ?
बच्चा	:	दादा जी... वहाँ तो मेरे जैसे बच्चे भी रहे होंगे... उनका क्या हाल हुआ होगा ?
दादा जी	:	हाँ... तुम्हारे जैसे लाखों बच्चे थे, जिन्होंने उस दृश्य को अपनी आँखों देखा था और आज भी उस दृश्य को याद कर वे सिहर उठते हैं ।
बच्चा	:	हमें और बताइए ना दादा जी...
दादा जी	:	बताता हूँ... तो सुनो बच्चा...
गीत	:	ये देखो बंगाल यहाँ का, हर चप्पा हरियाला हैं यहाँ का बच्चा-बच्चा, अपने देश पे मरनेवाला

		है आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिंदुस्तान की... इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की... वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम
शिक्षक	:	सिट डाउन...
बच्चे	:	गुड मॉर्निंग सर...
शिक्षक	:	गुड मॉर्निंग
बच्चे	:	सर... सुनिए न... आप विभाजन के बारे में कुछ बता रहे थे... आपने कहा था कि बहुत कुछ गँवा दिया...अब आगे बताइए ना विभाजन के बारे में क्या हुआ...
शिक्षक	:	20 फरवरी, 1947 को ब्रिटिश प्रधान मंत्री

		क्लेमेंट एटली ने हाउस ऑफ कॉमंस में यह घोषणा की थी...
बच्चा	:	सर... इसके आगे तो मैं बताती हूँ... मुझे भी मालूम है ...
शिक्षक	:	हाँ... बताओ...
बच्चा 1	:	हाँ... तो दोस्तों... सरकार ने 30 जून, 1948 से पहले...
शिक्षक	:	अरे पूनम... वहाँ कहाँ... यहाँ आकर बताओ न सबको..
बच्चा 2	:	जी सर... हाँ... तो दोस्तों... सरकार ने 30 जून, 1948 से पहले... सत्ता का हस्तांतरण कर भारत को छोड़ने का फैसला किया है ।
बच्चा 3		सर मैं..

शिक्षक	:	हाँ बताओ...
बच्चा 4	:	हालाँकि पूरी प्रक्रिया को लॉर्ड माउंटबेटेन की वजह से एक साल पहले कर लिया गया था।
बच्चा 5	:	हाँ सर... लॉर्ड माउंटबेटेन 31 मई, 1947 को लंदन से सत्ता के हस्तांतरण की मंजूरी लेकर नई दिल्ली लौटे थे।
बच्चा 6	:	मुझे भी याद आया... 02 जून, 1947 की ऐतिहासिक बैठक में विभाजन की योजना पर मोटे तौर पर सहमति बनी थी।
बच्चा 7	:	हाँ सर... भारत के विभाजन का निर्णय एक पूर्व शर्त की तरह था। भारत जैसे देश का विभाजन धार्मिक आधार पर हो इस योजना का व्यापक विरोध हुआ।
बच्चा 1	:	ऐसा कहा जाता है कि इस विभाजन के लिए वे ही नेता मानसिक रूप से तैयार थे, जिन्हें इस

		विभाजन में अपना हित और उज्ज्वल भविष्य दिख रहा था।
शिक्षक	:	अरे वाह बच्चों... आपको तो बहुत सारी जानकारियाँ है... अब आगे की क्लास हम शुरु करें, उससे पहले हम एक छोटा सा ब्रेक ले लेते हैं...
सभी बच्चे	:	ठीक है सर...
गीत	:	वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम
सूत्रधार 1	:	भाई, तुम्हारा विभाजन को लेकर क्या खयाल है?
सूत्रधार 2	:	भाई, विभाजन को बढ़ावा देने से समाज में सुधार होगा। विभिन्न समुदायों को अपने-

		अपने अधिकार मिलेंगे ।
सूत्रधार 1	:	नहीं नहीं, विभाजन से ऐसा कुछ भी नहीं होगा, अरे एकता से ही समाज का विकास हो सकता है । हम सब को एक होकर समृद्धि की राह पर आगे बढ़ना चाहिए ।
सूत्रधार 2	:	तुम्हारी बातें अच्छी हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि विभाजन से ही सब कुछ संभव होता है ।
सूत्रधार 1	:	नहीं नहीं... हम सबको मिलकर देश को प्रगति के पथ पर ले जाना चाहिए । और विभाजन की विभीषिका को मिटाना ही चाहिए ।
सूत्रधार 2	:	तुमको क्या लगता है... हम सब मिलकर यह संदेश अपना पाएंगे ?
सूत्रधार 1	:	क्यों नहीं अपना पाएँगे... इसके लिए हम सबको एकजूट होकर रहना पड़ेगा और यह

		एकजूटता ही हमारी धरोहर है, इसे संजो कर रखना पड़ेगा।
सूत्रधार 2	:	ठीक है, पर मुझे अखंड भारत के विभाजन के समय और क्या क्या हुआ वो तो बताओ...
सूत्रधार 1	:	इसके बारे तो वही लोग तुम्हें बताएँगे, जिन्होंने इसे भोगा है...
गीत :		वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम वंदे मातरम, वंदे मातरम.
बच्चे	:	गुड आफ़्टर नून सर...
शिक्षक	:	गुड आफ़्टर नून... सिट डाउन... हाँ तो आगे चलें... तो आगे सुनो... ... अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की बैठक 9 जून, 1947 को नई दिल्ली के इम्पीरियल

		होटल में हुई थी ।
बच्चा	:	भारतीय मुस्लिम लीग के साथ साथ उस समय कांग्रेस और अनेक नेताओं की अक्षमता या अनुचित महत्वाकांक्षाओं के कारण इस कदम का पुरजोर विरोध नहीं सो सका । कांग्रेस के नेता पं. जवाहर लाल नेहरू और मुस्लिम लीग के जिन्ना के आपसी द्वन्द का नतीजा देश को विभाजन के रूप में भोगना पड़ा ।
बच्चा 1	:	अच्छा... सर... सर... इसके आगे की बात फिर से मुझे मालूम है...
शिक्षक	:	अरी पूनम तुम को तो सब कुछ मालूम है... वैसे भी ज्ञान बाँटने से बढ़ता है... बाँटो ज्ञान...
बच्चा 1	:	दोस्तों... वहाँ विभाजन की माँग वाला प्रस्ताव लगभग सर्वसम्मति से पारित हुआ ।

		होटल में हुई थी।
बच्चा	:	भारतीय मुस्लिम लीग के साथ साथ उस समय कांग्रेस और अनेक नेताओं की अक्षमता या अनुचित महत्वाकांक्षाओं के कारण इस कदम का पुरजोर विरोध नहीं सो सका। कांग्रेस के नेता पं. जवाहर लाल नेहरू और मुस्लिम लीग के जिन्ना के आपसी द्वन्द का नतीजा देश को विभाजन के रूप में भोगना पड़ा।
बच्चा 1	:	अच्छा... सर... सर... इसके आगे की बात फिर से मुझे मालूम है...
शिक्षक	:	अरी पूनम तुम को तो सब कुछ मालूम है... वैसे भी ज्ञान बाँटने से बढ़ता है... बाँटो ज्ञान...
बच्चा 1	:	दोस्तों... वहाँ विभाजन की माँग वाला प्रस्ताव लगभग सर्वसम्मति से पारित हुआ।

बच्चा 2	:	जिसके पक्ष में 300 और विरोध में मात्र 10 मत पड़े ।
बच्चा 3	:	देखते ही देखते भारत और पाकिस्तान दो हिस्सों में बँट गया ।
बच्चा 5	:	धर्म के आधार पर बंगाल का पूर्वी हिस्सा भी विभाजित होकर पाकिस्तान में शामिल हो गया था ।
दादा जी	:	भारत के विभिन्न हिस्सों में 1946 और 1947 में हुई सांप्रदायिक हिंसा की व्यापकता और क्रूरता पर कई जगह विस्तार से किताबों में लिखा गया है । वह 04 मार्च, 1947 का दिन था । पुलिस ने हिंदुओं और सिखों के एक जुलूस पर, गोली चला दिया ।
सूत्रधार – 2	:	देखते ही देखते 06 मार्च की सुबह तक अमृतसर, जालंधर, रावलपिंडी, मुल्तान और

		सियालकोट समेत पंजाब के सभी शहर दंगों के लपटों में घिर गए थे ।
सूत्रधार – 1	:	पंजाब की तुलना में बंगाल में दशकों तक जारी विस्थापन और पुनर्वास का रूप बिलकुल अलग ही था ।
सूत्रधार – 2	:	बंगाल के लोग बहुत ही अभागे थे...
सूत्रधार – 1	:	क्यों...
सूत्रधार – 2	:	क्योंकि... बंगाल के लोगों को दो – दो बार विस्थापन झेलना पड़ा था ।
सूत्रधार – 1	:	दो...दो... बार...
सूत्रधार – 2	:	हाँ... दो...दो...बार ??
सूत्रधार – 1	:	एक बार तो उन सभी को अपना घर बार छोड़ कर पूर्वी पाकिस्तान जाना पड़ा ..